गृहिणी एवं सेवारत महिलाओं के पाल्यों की समायोजनशीलता, सुरक्षा–असुरक्षा की भावना एवं विद्यालयीय निष्पत्ति का अध्ययन

डॉ0 कंचन शर्मा *

सारांश

गृहिणी एवं सेवारत महिलाओ के पाल्यो की समायोजनशीलता, सुरक्षा–असुरक्षा की भावना एवं विद्यालयीय निष्पत्ति रुपी शीर्षक के अन्तर्गत सेवारत मे रात्री और दिवा सेवारत महिलाओ के पाल्यो पर अध्ययन किया गया। वर्तमान आर्थिक युग मे महिला के लिये नौकरी आवश्यक सी हो गयी है। आज वह दिन मे ही नही रात्री मे भी नौकरी करती है। माता के बगैर एक पल भी बच्चे का रहना दुश्कर होता है ऐसी स्थिती मे यदि माता बच्चे को छोड़ कर जाती है तो बच्चे की क्या स्थिती होती है। उसकी समायोजन शीलता, सुरक्षा–असुरक्षा की भावना और विद्यालयीय पर तात्कालिक परिस्थिती का क्या प्रभाव पड़ता है। इसी जानकारी हेतु राजस्थान राज्य के जयपुर व बीकानेर सभांग के 1008 विद्यार्थियो पर शोध कार्य किया गया।

गृहिणी एवं सेवारत महिलाओं के पाल्यों की समायोजनशीलता, सुरक्षा–असुरक्षा भावना एवं विद्यालययी निष्पत्ति की समस्या सेवारत और गृहिणी सभी महिलाओं की है। वर्तमान आर्थिक युग में अधिकतर सभी अभिभावक कामकाजी होते हैं। कामकाजी होने के कारण सभी को बालकों के संरक्षण सम्बन्धी समस्याएं आती है। शोध कार्य का उद्देश्य गृहिणी एवं सेवारत माताओं के पाल्यों समायोजनशीलता, सुरक्षा भावना तथा विद्यालयीय निष्पत्ति का अध्ययन करना है। जिसके अनुसार इस शोध के आधार पर रात्री एवं दिवा सेवारत महिलाओं के पाल्यों की समस्याओं के समाधान के लिए विद्यालयों द्वारा पाठ्यक्रम तैयार कर इनकी संरक्षण की सुव्यवस्था का प्रयास किया जा सकेगा।

इस निमित्त प्रस्तुत शोध की सम्प्राप्तियां, बहुआयामी, समाजोपयोगी और समाधानीय घटक है, इससे सेवारत और गृहिणी महिलाओं को बच्चों की परवरिश के लिए उचित मार्गदर्शन मिल सकेगा। इससे सेवारत (रात्री–दिवा) महिलाओं और गृहिणी महिलाओं के बालकों की समायोजन, सुरक्षा–असुरक्षा और विद्यालयीय निष्पत्ति सम्बन्धी समस्याओं का समाधान प्राप्त हो सकेगा। कामकाजी महिलाओं में रात्री कामकाजी महिलाओं के पाल्य अपने को कम सुरक्षित महसूस करते हैं। अतः इन अभिभावकों के लिए यह शोध कार्य मार्गदर्शन देगा। इस शोध की सम्प्राप्तियों से सभी सेवारत और गृहिणी महिलाओं को अपने बच्चों के लालन–पालन, शिक्षा–दीक्षा और अन्य सुरक्षा सम्बन्धी दिशा निर्देश प्राप्त हो सकेंगे।

बालक और बालिकाएं हमारी संपदा, थाती और धरोहर है। भविष्य में यही राष्ट्र के कर्णधार है सो हमारा दायित्व है कि हम इनके पालन–पोषण, शिक्षा–दीक्षा का प्रारंभ से ही ध्यान रखें तो बालक स्वस्थ, मेधावी व सच्चरित्र होंगे तथा समाज व राष्ट्र के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकेंगे।

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि अभी तक ऐसा कुछ सकारात्मक कार्य नहीं हुआ जिससे भटकते हुए बचपन तथा बहकती हुई किशोरावस्था को सही राह पर लाने की आशा जगे और बालक का चुनौति भरा भविष्य समायोजित, सुरक्षित और उच्च शैक्षिणिक उपलब्धि को देने वाला बन पाये। आज की भागती दौड़ती जिन्दगी में इन किशोर पाल्यों का पालन पोषण करने वाली माताएं भी है तो सेवारत माताएं भी। इनमें भी दिवा सेवारत या रात्री सेवारत दोनों प्रकार की माताएं है। अतः शोधकर्त्री के मन में निम्न प्रश्न उठे– क्या गृहिणी, रात्री एवं दिवा सेवारत महिलाओं के पाल्यों की समायोजनशीलता में अन्तर पाया जाता है? क्या गृहिणी, रात्री एवं दिवा सेवारत महिलाओं के पाल्यों की सुरक्षा की भावना में अन्तर पाया जाता है? क्या गृहिणी, रात्री एवं दिवा सेवारत महिलाओं के पाल्यों की विद्यालयीय निष्पत्ति में अन्तर पाया जाता है? इन सब प्रश्नों के उत्तर खोजने हेतु शोधकर्त्री ने ''गृहिणी एवं सेवारत महिलाओं के पाल्यों की समायोजनशीलता, सुरक्षा–असुरक्षा की भावना एवं विद्यालयीय निष्पत्ति का अध्ययन'' विषय पर अध्ययन करने का निश्चय किया।

* (प्रोफेसर), बी.टी.टी.सी., गॉ.वि.मं., सरदारशहर

1.2 अध्ययन का महत्त्व एवं आवश्यकता–

बालक का मन कल्पना प्रधान होता है, उसके व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के लिए उचित वातावरण और आवश्यक परिस्थितियां पैदा करना माता–पिता का सर्वोत्तम कर्त्तव्य होता है। यदि वे चाहते हैं कि उनका बच्चा जीवन में हर क्षेत्र में सफलता अर्जित करें, तो इसके लिए बालक का समायोजित और सुरक्षित होना आवश्यक है। पारिवारिक वातावरण और रिश्तों की उष्मा, भावनात्मक सुरक्षा, अपनत्व और प्रेम ऐसे गुण जो बालक को एक श्रेष्ठ इंसान बनाते हैं। बच्चों को सही दिशा प्रदान करने के लिए हमें इन गुणों की अहमियत् को स्वीकार करना होगा, पर विडम्बना यह है कि एक ओर तो दो जून की रोटी के लिए त्रस्त मजदूर अभिभावक बालक की ओर ध्यान नहीं दे पाते हैं। वहीं दूसरी ओर आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न वर्ग में माता–पिता धन कमाने की धुन में इतना व्यस्त रहते हैं कि उसे समय नहीं दे पातें हैं और उसके समक्ष आदर्श स्थापित नहीं कर पाते हैं। माता और पिता दोनों के सेवारत होने पर, माता की अनुपस्थिति में बालकों को नौकरों के भरोसे या बालगृह में छोड़ दिया जाता है। उन बालकों की परवरिश प्रभावित होती है तथा माता की अनुपस्थिति में समायोजन और सुरक्षा भावना पर प्रभाव पड़ता है।

समायोजनशीलता बालक के विकास का प्रमुख आधार है, समायोजन बालक के जीवन के हर पक्ष को प्रभावित करता है चाहे वह गृह, सामाजिक, स्वास्थ्य हो या सांवेगिक। गृहिणी, रात्री और दिवा सेवारत महिलाओं के पाल्यों की समायोजनशीलता माता की अनुपस्थिति में किस तरह प्रभावित होती है। कुसमायोजित बच्चा तनाव ग्रस्त और परेशान रहता हैं वह अपनी किसी भी समस्या को माता के समक्ष नहीं रख पाता है और असुरक्षा की भावना में जीवन जीता है। इसीलिए यह शोध आवश्यकता परक हो गया है कि किस तरह हम गृहिणी, रात्री और दिवा सेवारत महिलाओं के पाल्यों को समायोजित करें ताकि वे अपने आप को सुरक्षित महसूस करें। जो उसके दैनिक व्यवहार में दृष्टि गोचर होता है। इसमें महत्वपूर्ण भूमिका माता का रात्री एवं दिवा सेवारत होना होता है। बालक का भावुक मन माता के सानिध्य में रहना पसन्द करता है और उसके साथ ही स्वयं को सुरक्षित महसूस करता है। उसकी सुरक्षा भावना के दायरे को कैसे बढ़ाया जाये या माता के सेवारत होने पर उसकी सार संभाल की सुव्यवस्था हो सके, इसीलिए यह शोधकार्य महत्वपूर्ण एवं आवश्यक हो गया है।

1.3 अध्ययन का औचित्य

बच्चा सर्वप्रथम अपने परिवार में अपने माता–पिता के सरंक्षण में रहकर बहुत कुछ सीखता है उसका अधिकांश समय परिवार के साथ ही व्यतीत होता है माता को उसका पहला गुरू और पिता को उसका दूसरा गुरू माना गया है। अतः बच्चे के नैतिक–अनैतिक जिद्दी, चिड़चिड़ा, डरपोक व गुस्सैल बनाने में भी महिलाओं की प्रमुख भूमिका होती है। बालक जब माता की गोद में होता है तो खिला हुआ एक फूल की तरह होता है। बच्चों को जरा सा कुछ हो जायें तो मां–बाप चिंतित हो जाते है। घर का कोई भी बालक थोड़ा सा इधर–उधर कहीं खड़ा भी दिखे तो मां–बाप बहुत सशंकित हो जाते है, बड़ा डर लगता है, उनको कि बच्चा कहीं ऐसा न कर ले, वैसा न कर ले, कभी उनको डर लगता है, कि बच्चा पढने से जी चुराने लगा है, कभी लगता है कि बच्चा झूठ बोलना सीख गया है, कभी कक्षा में पीछे रह जाने का भय तो कभी ऐसी वैसी किताबों में रूचि जग जाने का भय, कभी ऐसा डर कि कोई बालक देर से घर क्यों आया, यह अजीब विडम्बना है कि जो बच्चे जन्म से ही निडर होते है, उनको लेकर हम सदा भयभीत रहते है लड़की का होना तो जाने कैसी–कैसी आशंकाओं और दुः शंकाओं का विषय बन जाता है। उपरोक्त समस्याओं से सम्बन्धित अनेक अध्ययन हुए है परन्तु ''गृहिणी और सेवारत महिलाओं के पाल्यों की समायोजनशीलता, सुरक्षा–असुरक्षा की भावना और विद्यालयीय निष्पत्ति'' विषय पर अध्ययन नहीं हुआ है। इसलिए शोधकर्त्री ने इस समस्या में समायोजन, सुरक्षा–असुरक्षा की भावना और विद्यालयीय निष्पत्ति नामक चरों का चयन किया। अतः प्रस्तुत शोध इस निमित्त अत्यन्त औचित्य पूर्ण है।

1.4 समस्या कथन :–

''गृहिणी एवं सेवारत महिलाओं के पाल्यों की समायोजनशीलता, सुरक्षा–असुरक्षा की भावना एवं विद्यालयीय निष्पत्ति का अध्ययन।''

1.5 उद्देश्य :–

1. गृहिणी, रात्री एवं दिवा सेवारत महिलाओं के पाल्यों की समायोजशीलता का अध्ययन।
2. गृहिणी, रात्री एवं दिवा सेवारत महिलाओं के पाल्यों में सुरक्षा–असुरक्षा की भावना का अध्ययन।
3. गृहिणी, रात्री एवं दिवा सेवारत महिलाओं के पाल्यों में विद्यालयीय निष्पति का अध्ययन।
4. गृहिणी, रात्री एवं दिवा सेवारत महिलाओं के पाल्यों की समायोजनशीलता का परस्पर तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. गृहिणी रात्री एवं दिवा सेवारत महिलाओं के पाल्यों में सुरक्षा–असुरक्षा की भावना का परस्पर तुलनात्मक अध्ययन करना।
6. गृहिणी रात्री एवं दिवा सेवारत महिलाओं के पाल्यों में विद्यालयीय निष्पति का परस्पर तुलनात्मक अध्ययन करना।
7. गृहिणी महिलाओं के पाल्यों की समायोजनशीलता, सुरक्षा–असुरक्षा एवं विद्यालयीय निष्पत्ति के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।
8. रात्री सेवारत महिलाओं के पाल्यों की समायोजनशीलता, सुरक्षा–असुरक्षा एवं विद्यालयीय निष्पत्ति के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।
9. दिवा सेवारत महिलाओं के पाल्यों की समायोजनशीलता, सुरक्षा–असुरक्षा एवं विद्यालयीय निष्पत्ति के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।

1.6 परिकल्पना :–

1. गृहिणी, रात्री एवं दिवा सेवारत महिलाओं के पाल्यों की समायोजनशीलता सामान्य स्तर की है।
2. गृहिणी, रात्री एवं दिवा सेवारत महिलाओं के पाल्यों की सुरक्षा–असुरक्षा की भावना सामान्य स्तर की है।
3. गृहिणी, रात्री एवं दिवा सेवारत महिलाओं के पाल्यों की विद्यालयीय निष्पत्ति सामान्य स्तर की है।
4. गृहिणी, रात्री एवं दिवा सेवारत महिलाओं के पाल्यों की समायोजनशीलता में परस्पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
5. गृहिणी, रात्री एवं दिवा सेवारत महिलाओं के पाल्यों में सुरक्षा–असुरक्षा की भावना में परस्पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
6. गृहिणी, रात्री एवं दिवा सेवारत महिलाओं के पाल्यों में विद्यालयीय निष्पत्ति में परस्पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
7. गृहिणी महिलाओं के पाल्यों की समायोजनशीलता, सुरक्षा–असुरक्षा की भावना एवं विद्यालयीय निष्पत्ति के मध्य परस्पर कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।
8. रात्री सेवारत महिलाओं के पाल्यों की समायोजनशीलता, सुरक्षा–असुरक्षा की भावना एवं विद्यालयीय निष्पत्ति के मध्य परस्पर कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।
9. दिवा सेवारत महिलाओं के पाल्यों की समायोजनशीलता, सुरक्षा–असुरक्षा की भावना एवं विद्यालयीय निष्पत्ति के मध्य परस्पर कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

1.7 प्रयुक्त शब्दावली की व्याख्या :–

शेफर के अनुसार –

''समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से एक जीवित प्राणी अपनी आवश्यकताओं एवं इन आवश्यकताओं की सन्तुष्टि को प्रभावित करने वाली पारिस्थितियों के साथ सन्तुलन बनाये रखता है।''

एडलर के अुनसार–

''मानव के समस्त व्यवहार के पीछे केवल एक प्रेरणात्मक शक्ति को कार्य करते हुए बताया है इस शक्ति का नाम उन्होने हीनता की भावना रखा।''

आर्थर जे. जोन्स के अनुसार –

''निष्पत्ति परीक्षण व्यक्ति विशेष के महत्वपूर्ण साधन है, जिनसे जाना जाता है कि उसके द्वारा इच्छित लक्ष्यों के सम्बन्ध में उसने किस सीमा तक प्रगति की है। क्या वह आगामी चरण उठाने के लिए तैयार है और उसकी उपलब्धि उसके साथियों की तुलना में किस स्तर की हैं।''

अध्याय द्वितीय

2.1 प्रस्तावना :–

इस अध्याय के अन्तर्गत समस्या से सम्बन्धित चरों पर भारत एवं विदेशों में किये गये अध्ययनों का शीर्षक एवं निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है।

अध्याय तृतीय

3.1 अध्ययन की विधि – सर्वेक्षण विधि

3.2 परिसीमन–

राजस्थान के बीकानेर व जयपुर संभाग में से 1008 विद्यार्थियों को लिया गया है।

3.3 प्रस्तुत शोध में न्यादर्श चयन –

बीकानेर एवं जयपुर संभाग के 1008 विद्यार्थियों पर अध्ययन किया। शोधकर्त्री ने न्यादर्श चयन हेतु स्व विवेक न्यादर्श प्रणाली में उद्देश्यपूर्ण एवं यादृच्छिक विधि का प्रयोग किया है।

3.4 शोध में प्रयुक्त उपकरण –

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्त्री ने जिन उपकरणों का प्रयोग किया वे निम्न लिखित है–

1. समायोजन अनुसूची– डॉ. आर. के. ओझा द्वारा निर्मित –
2. सुरक्षा–असुरक्षा– डॉ. गोविन्द तिवारी एवं डॉ. एच. एम. सिंह द्वारा निर्मित–

3.5 अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी–

अध्ययन में परिणात्मक तथा गुणात्मक गणना हेतु हम निम्नलिखित सांख्यिकी का प्रयोग किया जायेगा– 1. मध्यमान, 2. प्रमाप विचलन 3. क्रान्तिक अनुपात मान 4. प्रतिशत की सार्थकता तथा 5. सह–सम्बन्ध।

अध्याय–चतुर्थ

सारणी संख्या – 01

बीकोनर संभाग की गृहिणी महिलाओं के पाल्यों की समायोजनशीलता मापनी में विभिन्न समायोजन पक्ष के प्राप्तांको का प्रतिशत एवं प्रतिशत की सार्थकता–

विद्यार्थी	प्रतिशत			प्रतिशत की सार्थकता		
	उच्च	औसत	निम्न	उच्च	औसत	निम्न
बीकानेर संभाग की गृहिणी महिलाओं के पाल्यों का गृह समायोजन	18.45	25.60	55.95	17.07 से 19.84	23.66 से 27.53	51.67 से 60.23
बीकानेर संभाग की गृहिणी महिलाओं के पाल्यों का स्वास्थ्य समायोजन	27.98	17.86	54.17	25.86 से 30.10	16.52 से 19.20	50.03 से 58.31

बीकानेर संभाग की गृहिणी महिलाओं के पाल्यों का सामाजिक समायोजन	5.95	30.95	63.10	5.53 से 6.37	28.60 से 33.30	58.27 से 67.92
बीकानेर संभाग की गृहिणी महिलाओं के पाल्यों का सांवेगिक समायोजन	4.76	39.88	55.36	4.44 से 5.09	36.84 से 42.92	51.12 से 59.59

उपरोक्त सारणी में बीकानेर संभाग की गृहिणी महिलाओं के पाल्यों की समायोजनशीलता के विभिन्न पक्ष यथा गृह, स्वास्थ्य, सामाजिक और सांवेगिक समायोजन के प्राप्तांकों के प्रतिशत एवं प्रतिशत की सार्थकता की गणना की गई। जिसके अनुसार बीकानेर संभाग की गृहिणी महिलाओं के पाल्यों का समायोजन सभी पक्षों में निम्न स्तर पर अधिक पाया गया। जैसे– गृह 51.67 से 60.23, स्वास्थ्य 50.03 से 58.31, सामाजिक 58.27 से 67.92 और सांवेगिक 51.12 से 59.59 पाया गया।

बीकोनर संभाग की गृहिणी महिलाओं के पाल्यों की समायोजनशीलता मापनी में विभिन्न समायोजन पक्ष के प्राप्तांको का प्रतिशत एवं प्रतिशत की सार्थकता

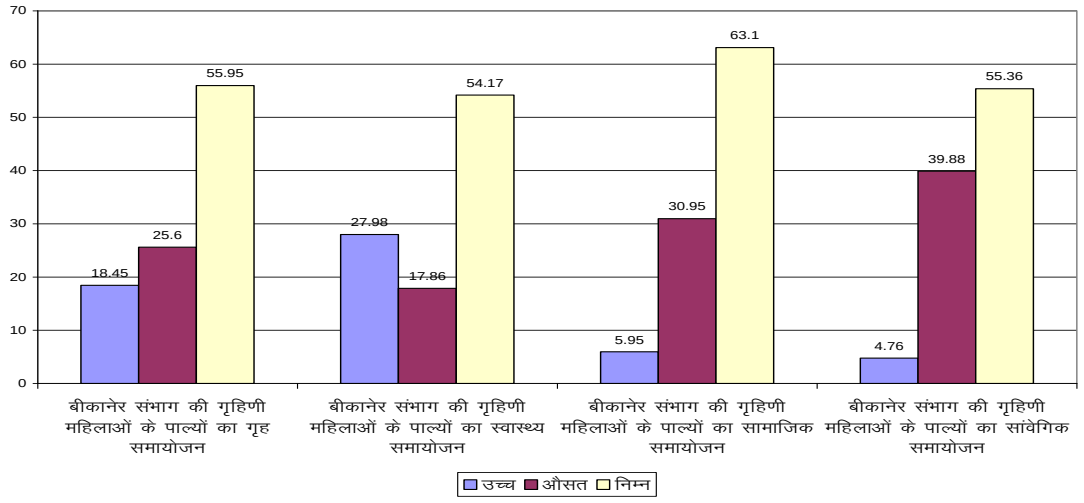

सारणी संख्या – 19

बीकानेर एवं जयपुर संभाग की गृहिणी महिलाओं के बालकों की सुरक्षा–असुरक्षा मापनी के प्राप्तांको का प्रतिशत एवं प्रतिशत की सार्थकता–

विद्यार्थी	प्रतिशत			प्रतिशत की सार्थकता		
	उच्च	औसत	निम्न	उच्च	औसत	निम्न
बीकानेर संभाग की गृहिणी महिलाओं के बालक	42.86	57.14	0.00	38.24 से 47.48	50.96 से 63.32	0.00 से 0.00
जयपुर संभाग की गृहिणी महिलाओं के बालक	2.38	71.43	26.19	2.18 से 2.58	63.69 से 79.17	23.39 से 28.99

उपरोक्त सारणी में बीकानेर एवं जयपुर संभाग की गृहिणी महिलाओं के बालकों की सुरक्षा–असुरक्षा मापनी के प्राप्तांकों के प्रतिशत एवं प्रतिशत की सार्थकता की गणना की गई। जिसके अनुसार बीकानेर संभाग की गृहिणी महिलाओं के बालकों में सुरक्षा भावना औसत स्तर पर अधिक 50.96 से 63.32 पायी गई। इसी प्रकार जयपुर संभाग की गृहिणी महिलाओं के बालकों में औसत स्तर पर असुरक्षा की भावना 63.69 से 79.17 पायी गई।

बीकानेर एवं जयपुर संभाग की गृहिणी महिलाओं के बालकों की सुरक्षा–असुरक्षा मापनी के प्राप्तांको का प्रतिशत एवं प्रतिशत की सार्थकता

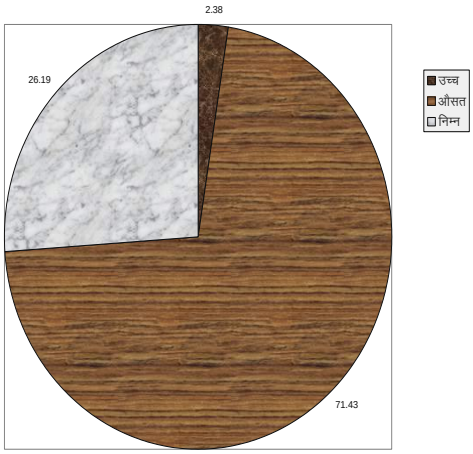

सारणी संख्या – 25

बीकोनर एवं जयपुर संभाग की गृहिणी महिलाओं के पाल्यों की विद्यालयीय निष्पत्ति मापनी के प्राप्तांको का प्रतिशत एवं प्रतिशत की सार्थकता–

विद्यार्थी	प्रतिशत			प्रतिशत की सार्थकता		
	उच्च	औसत	निम्न	उच्च	औसत	निम्न
बीकानेर संभाग की गृहिणी महिलाओं के पाल्यों	86.31	8.33	5.36	79.69 से 92.93	7.73 से 8.94	4.98 से 5.73
जयपुर संभाग की गृहिणी महिलाओं के पाल्यों	91.07	8.33	0.60	84.08 से 98.06	7.73 से 8.94	0.56 से 0.63

उपरोक्त सारणी में बीकानेर एवं जयपुर संभाग की गृहिणी महिलाओं के पाल्यों की विद्यालयीय निष्पत्ति मापनी के प्राप्तांकों के प्रतिशत एवं प्रतिशत की सार्थकता की गणना की गई। जिसके अनुसार बीकानेर एवं जयपुर संभाग की गृहिणी महिलाओं के पाल्यों की विद्यालयीय निष्पत्ति का प्रतिशत उच्च स्तर पर अधिक पाया गया। जैसे– 79.69 से 92.93 और 84.08 से 98.06 पाया गया।

बीकोनर एवं जयपुर संभाग की गृहिणी महिलाओं के पाल्यों की विद्यालयीय निष्पत्ति मापनी के प्राप्तांको का प्रतिशत एवं प्रतिशत की सार्थकता

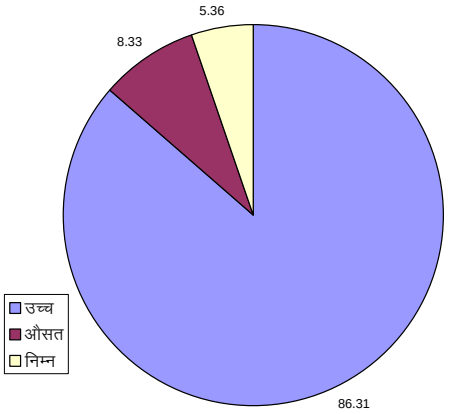

बीकानेर संभाग

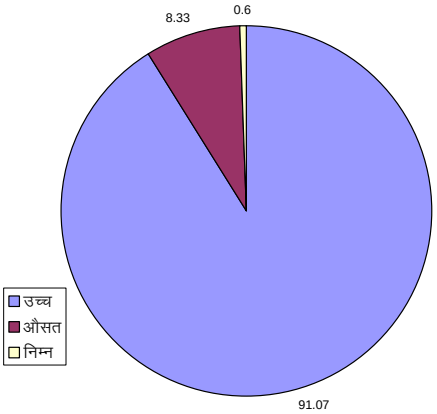

जयपुर संभाग

अध्याय–पंचम

5.1 सम्प्राप्ति

परिकल्पना 01 –

गृहिणी, रात्री एवं दिवा सेवारत महिलाओं के पाल्यों की समायोजनशीलता सामान्य स्तर की है।

निष्कर्ष :–

बीकानेर एवं जयपुर संभाग की गृहिणी एवं रात्री सेवारत महिलाओं के पाल्यों, बालकों की समायोजनशीलता उच्च स्तर की है, जबकि दिवा सेवारत महिलाओं के पाल्यों की स्वास्थ्य तथा सामाजिक समायोजन में निम्न स्तर तथा गृह और सांवेगिक समायोजन सामान्य स्तर का है, तथा दिवा सेवारत महिलाओं के बालकों की गृह, स्वास्थ्य एवं सांवेगिक समायोजन सामान्य स्तर का एवं सामाजिक समायोजन निम्न स्तर का जबकि बीकानेर संभाग की दिवा सेवारत महिलाओं की बालिकाओं का समायोजन सभी पक्षों में सामान्य स्तर का है, तथा जयपुर की दिवा सेवारत महिलाओं की बालिकाओं का सांवेगिक एवं स्वास्थ्य समायोजन सामान्य स्तर का लेकिन गृह समायोजन निम्न स्तर का एवं सामाजिक समायोजन उच्च स्तर का है। अतः उक्त परिकल्पना आंशिक रूप से ही स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 02 –

गृहिणी, रात्री एवं दिवा सेवारत महिलाओं के पाल्यों में सुरक्षा–असुरक्षा की भावना सामान्य स्तर की है।

निष्कर्ष :–

गृहिणी, रात्री एवं दिवा सेवारत महिलाओं के बालक–बालिकाओं की सुरक्षा भावना सामान्य स्तर की है। अतः उक्त परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 03 –

गृहिणी, रात्री और दिवा सेवारत महिलाओं के पाल्यों की विद्यालयीय निष्पत्ति सामान्य स्तर की है।

निष्कर्ष :–

बीकानेर एवं जयपुर संभाग की गृहिणी, रात्री एवं दिवा सेवारत महिलाओं के पाल्यों की विद्यालयीय निष्पत्ति के अन्तर्गत बीकानेर एंव जयपुर संभाग की गृहिणी महिलाओं के पाल्यों, बालक एवं बालिकाओं की विद्यालयीय निष्पत्ति उच्च स्तर की है। बीकानेर संभाग की दिवा सेवारत महिलाओं के पाल्यों की विद्यालयीय निष्पत्ति निम्न स्तर की, बालक एवं बालिकाओं की सामान्य स्तर की पाई गई। जबकि जयपुर संभाग की दिवा सेवारत महिलाओं के पाल्यों की विद्यालयीय निष्पत्ति सामान्य स्तर की, बालकों की उच्च स्तर की एवं बालिकाओं की निम्न स्तर की पाई गई। बीकानेर एवं जयपुर संभाग के पाल्य, बालक एवं बालिकाओं की विद्यालयीय निष्पत्ति सामान्य स्तर की है। अतः उक्त परिकल्पना आंशिक रूप से अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 04 :–

गृहिणी, रात्री एवं दिवा सेवारत महिलाओं के पाल्यों की समायोजनशीलता में परस्पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष :–

बीकानेर एवं जयपुर संभाग की रात्री सेवारत महिलाओं के पाल्यों, बालक एवं बालिकाओं का स्वास्थ्य, सामाजिक एवं सांवेगिक समायोजन में कोई अन्तर नहीं है। लेकिन गृह समायोजन बीकानेर के पाल्यों एवं बालिकाओं का जयपुर के पाल्यों एवं बालिकाओं से अधिक है, जबकि बीकानेर संभाग की दिवा सेवारत महिलाओं के पाल्यों, बालक एवं बालिकाओं के समायोजन के सभी पक्षों का समायोजन जयपुर संभाग की दिवा सेवारत महिलाओं के पाल्यों, बालक एवं बालिकाओं से अधिक है। जबकि दोनों संभाग की गृहिणी महिलाओं के पाल्यों, बालक एवं बालिकाओं के समायोजन में कोई अन्तर नहीं है।

बीकानेर संभाग की गृहिणी महिलाओं के बालक एवं बालिकाओं का समायोजन रात्री और दिवा सेवारत महिलाओं के बालक एवं बालिकाओं से अधिक है। तथा दिवा सेवारत महिलाओं के बालकों का समायोजन रात्री सेवारत महिलाओं के बालक एवं बालिकाओं से अधिक है। जयपुर संभाग की गृहिणी महिलाओं के बालक एवं बालिकाओं का समायोजन रात्री और दिवा सेवारत महिलाओं के बालक एवं बालिकाओं से अधिक है। तथा दिवा सेवारत महिलाओं के बालक एवं बालिकाओं का समायोजन रात्री सेवारत महिलाओं के बालक एवं बालिकाओं से अधिक है। अतः उक्त परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 05 :–

गृहिणी, रात्री एवं दिवा सेवारत महिलाओं के पाल्यों में सुरक्षा–असुरक्षा की भावना में परस्पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष :–

बीकानेर संभाग की गृहिणी, रात्री और दिवा सेवारत महिलाओं के पाल्य जयपुर की गृहिणी, रात्री और दिवा सेवारत महिलाओं के पाल्यों, बालक एवं बालिकाओं से अधिक सुरक्षित महसूस करते हैं।

बीकानेर एवं जयुपर संभाग की रात्री सेवारत महिलाओं के बालकों की सुरक्षा भावना में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 06 :–

गृहिणी, रात्री एवं दिवा सेवारत महिलाओं के पाल्यों में विद्यालयीय निष्पत्ति में परस्पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष :–

बीकानेर एवं जयपुर संभाग की गृहिणी, रात्री और दिवा सेवारत महिलाओं के पाल्यों, बालक एवं बालिकाओं की विद्यालयीय निष्पत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। बीकानेर के रात्री, दिवा सेवारत महिलाओं और गृहिणी महिलाओं पाल्यों, बालक एवं बालिकाओं की विद्यालयीय निष्पत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है। इसी प्रकार जयपुर संभाग की भी सभी विद्यार्थियों की विद्यालयीय निष्पत्ति में अन्तर नहीं है। लेकिन जयपुर संभाग के रात्री सेवारत महिलाओं के पाल्य बालक एवं बालिकाओं की विद्यालयीय निष्पत्ति गृहिणी महिलाओं के विद्यार्थियों से अधिक है। इसी प्रकार बीकानेर संभाग की रात्री सेवारत महिलाओं की बालिकाओं की विद्यालयीय निष्पत्ति गृहिणी महिलाओं की बालिकाओं से अधिक है। अतः परिकल्पना आंशिक रूप से स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 07 :–

गृहिणी महिलाओं के पाल्यों की समायोजनशीलता, सुरक्षा–असुरक्षा की भावना एवं विद्यालयीय निष्पत्ति के मध्य परस्पर कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

निष्कर्ष :–

बीकानेर संभाग की गृहिणी महिलाओं के बालक–बालिकाओं की समायोजनशीलता बढ़ने से उनकी विद्यालयीय निष्पत्ति में भी वृद्धि होती है, तथा सुरक्षा भावना में भी वृद्धि होती है। इसी प्रकार विद्यालयीय निष्पत्ति बढ़ने से बालिकाओं में सुरक्षा भावना बढ़ती है। लेकिन बालकों में निम्न गति से बढ़ती है। जयपुर संभाग की गृहिणी महिलाओं के बालकों की समायोजनशीलता बढ़ने से सुरक्षा भावना और विद्यालयीय निष्पत्ति में और सुरक्षा भावना बढ़ने से विद्यालयीय निष्पत्ति में वृद्धि होती है। लेकिन बालिकाओं में समायोजन बढ़ने से सुरक्षा एवं विद्यालयीय निष्पत्ति में वृद्धि होती है, लेकिन निम्न स्तर की। अतः उक्त परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 08 :–

रात्री सेवारत महिलाओं के पाल्यों की समायोजनशीलता, सुरक्षा–असुरक्षा की भावना एवं विद्यालयीय निष्पत्ति के मध्य परस्पर कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

निष्कर्ष :–

बीकानेर एवं जयपुर संभाग की रात्री सेवारत महिलाओं के बालक–बालिकाओं की समायोजनशीलता में वृद्धि होने पर सुरक्षा की भावना और विद्यालयीय निष्पत्ति में भी वृद्धि होती है, तथा सुरक्षा भावना में वृद्धि होने पर विद्यालयीय निष्पत्ति में भी वृद्धि होती है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 09 :–

दिवा सेवारत महिलाओं के पाल्यों की समायोजनशीलता, सुरक्षा–असुरक्षा की भावना और विद्यालयीय निष्पत्ति के मध्य परस्पर कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

निष्कर्ष :–

बीकानेर एवं जयपुर संभाग की दिवा सेवारत महिलाओं के बालक–बालिकाओं की समायोजनशीलता में वृद्धि होने पर सुरक्षा की भावना एवं विद्यालयीय निष्पत्ति में भी वृद्धि होती है, तथा सुरक्षा भावना में वृद्धि होने पर विद्यालयीय निष्पत्ति में भी वृद्धि होती है। अतः उक्त परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

अग्रवाल, जे.सी. : ''शिक्षा पर विचार'' आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली (1974)।

अस्थाना, विपिन्न : मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, (1994)।

कपिल, एच. के. : सांख्यिकी के मूल तत्व, (सामाजिक विज्ञान में) राजा बलवन्त सिंह पोस्ट ग्रेजयूट कॉलेज, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, (1999)।

कपिल, एच. के. : अनुसंधान विधियां, द्वितीय संस्करण, हर प्रसाद भार्गव, कचहरी घाट आगरा (1981)

कपिल शिबा, : ''अनुसंधान विधि शास्त्र'' दूरस्थ शिक्षा विभाग, ॅौम विश्वविद्यालय, सरदारशहर, चूरू सन् (2004)।

Buch, M. B. : Second Survey of Research in Education (1972-1978) Society for Educational Research and Development Baroda.

Buch, M. B. : Third Survey of Research in Education (1978-1983) National Council of Education Research and Training, New Delhi.

Buch, M. B. : Fourth Survey of Research in Education (1983-1988) Vol. (I) and (II) National Council of Educational Research and Training New Delhi.

Sharma, S. K. : Fifth Survey of Research in Education (1988-92), National Council of Educational Research and Training New Delhi.

Website

www.google.co.in

www.mapsofindia.com

●